Journal Homepage: -www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI:10.21474/IJAR01/19864
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/19864

ISSN NO. 2320-5407

RESEARCH ARTICLE

आलोचक राज मोहन झाक आलोचना प्रस्तुति

RAHUL RAJ GUPTA.

Research Scholar, Department of Maithili, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga - 846004

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 08 September 2024
Final Accepted: 17 October 2024
Published: November 2024

Key words:-
आलोचना-साहित्य,प्रस्तुतिकरण,आधुनिकता, शहरी-परिवेश,पुरस्कृत,साहित्य-अकादेमी ।

सारांश

साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत राज मोहन झा अपन भिन्ने पहिचान बनौने छथि। कथा हो वा आलोचना दुनू मैथिलीक नव स्वादक आस्वाद करबैत अछि। कथा जतए आधुनिकताकेँ लेने शहरी परिवेशक चतुर्दिक चकभाउर करैत नव-नव विषय वस्तुक साक्षात्कार करबैत अछि, तहिना हुनक आलोचनात्मक निबंध सभ एकटा नव प्रतिमान स्थापित करैत अछि। ई जतेक निबंध लिखलनि ओ मैथिल समाजक लेल हितकारिये रहल अछि, मुदा इर्ष्यालुक लेल ओ निरर्थके अछि। राज मोहन झा साहित्यिक समालोचक नहि ओ सामाजिक समालोचक रहलाह अछि। सामाजिक कुव्यव्स्थाक प्रति सदति ओ अपन कर्तव्य-पालन करैत रहलाह संगहि समाजकेँ जगएबाक प्रयास कएलनि। इएह कारण अछि जे ओ आलोचना लिखलनि आ अनेक संस्थाकेँ ओ समक्ष अनलनि। एहिलेल ओ साहित्य अकादेमी आ विद्यापति पर्वपर अनेक आलेख लिखलनि।

Copyright, IJAR, 2024,. All rights reserved.

प्रस्तावना :-

भारतमे अति प्राचीन कालहिसँ रचना सभक समालोचन होइत रहल अछि। ई समालोचना निबन्धक रुपमे वा मीमांसाक रुपमे एवं टीकाक रुपमे प्रवहमान रहल अछि। भरतसँ लए अद्यावधि अनेक संस्कृत एवं मैथिलीक विद्वान लोकनि एकर क्रम बनाकए रखने छथि। निबन्ध-लेखन भारतीय वाङ्मयमे अति प्राचीन विधा थिक। निबन्धक विषय-वस्तुक क्षेत्र क्रमशः व्यापक ओ विस्तृत होइत गेल, तेँ आइ कोनो प्रकारक लेख जे लिखल जाइत अछि, ओकरा निबन्धेक अन्तर्गत राखल जाइत अछि। राज मोहन झा मुख्य रुपसँ समालोचनात्मक निबन्ध लिखलनि अछि। समालोचनाक लेल अंगरेजीमे प्रयुक्त शब्द अछि 'क्रिटिसिज्म' जकर सामान्य अर्थ होइछ - समीक्षा वा परीक्षा।

Corresponding Author:- Rahul Raj Gupta
Address:- Vill- Banaul, Ward No- 08, P.O- Banaul, P.S- Nanpur, Dist- Sitamarhi, Bihar, 843326.

'समालोचना'क अर्थ होइछ सम्यक रुपसँ चारुकातसँ देखब, देखिकए चिन्हब आ सविस्तार जाँचब। समीक्षावृत्तिकेँ समालोचना वृतिक समान मानि आचार्य रमानाथ झा ओहि वृत्तिपर एक लेख लिखने छथि आओर ओ एकगोट निबन्धहिक शीर्षक अछि। ओकर प्रारम्भहिमे समीक्षा वृत्तिक सामान्य लक्षण निर्दिष्ट अछि -"समीक्षा ओ साधु तात्विक प्रक्रिया थिक जाहिमे लोक कोनहु दर्शनीय वस्तुकेँ देखबाक इच्छा करय, देखय ओ देखिकेँ जाहिमे द्रष्टव्य होइक तकरा दोसराकेँ देखयबाक इच्छा करय देखाबय। आचार्य समीक्षा आ समालोचनामे सम्भवतः तात्विक अन्तर नहि पबैत छथि। प्रो० उमानाथ झा समीक्षा शब्दके अंगरेजीक स्कूटनीक सन्निकट मानैत छथि।"[1]

समालोचना आधुनिक युगक विकासक संग साहित्यक एकटा विधाक रुपमे प्रयुक्त होइत अछि। कोनो रचना कृतिमे लेखक अपन भावनाकेँ अभिव्यक्ति दैत छथि, मुदा आलोचनामे आलोचक निर्धारित करैत छथि जे कोनो रचना कृति वा कलाक लेल कोन-कोन सामग्रीक होएब अनिवार्य अछि संगहि कोन एहन युक्ति लगाओल जाए जे रचना कृति विधा विशेषक अन्तर्गत आबि जाएत। साहित्यमे वस्तु-स्थितिक यथावत् चित्रण कएल जाइत अछि, मुदा समालोचना एक गोट तराजू थिक, एक गोट मापक थिक जकरा द्वारा साहित्यिक विभिन्न तत्त्व यथा - कथ्य, शिल्प, कथानक, कथोपकथन, चरित्र-चित्रण, रस, अलंकार, रीति, गुण, दोष आदिक आधारपर कोनो कृतिक निरीक्षण कए ओकर मूल्यांकन कएल जाइछ। एहि संघर्षक युगमे, अराजकताक युगमे, कोनहुँ चिन्तककेँ मनुष्यक चित्रपर ध्यान जाएब स्वाभाविक। ताहूमे समालोचककेँ तँ स्वाभाविके। तेँ कलाकारक वा कविक मन वा चित्तपर ध्यान अवश्ये जएतनि वा जएबाक चाहियनि। एकर संगहि ओ पाठकक मनकेँ सेहो गमैत छथि। प्रत्युत समालोचकक काजे छनि रुचिक परिष्कार अथवा कलाकारकेँ पाठकसँ जोड़ब, से समस्त कर्म मानसिक स्वास्थ्यक परीक्षकक वा चिकित्सकक कर्म थिक। एहि दृष्टिकोणसँ रिचर्ड्स कहैत छथि - "जेना कोनो चिकित्सक शरीरक स्वास्थ्यसँ सम्बद्ध रहैत छथि, तहिना कोनो समालोचक मानसिक स्वास्थ्यसँ।"[2] जेना योग शास्त्रचित्त-वृत्ति निरोधक शास्त्र थिक, जेना तंत्रशास्त्र 'चित्तंमंत्रा' कहैत अछि अथवा गीता 'समत्व योग उच्यते' कहैत अछि आ एहि प्रकारक शान्त आनन्दक अन्वेषी कलाविदग्ध रस-ध्वनिवादी समाधि वा उपसामयिक अवस्थाकेँ प्राप्त करबाक हेतु जाहि 'रसो वैसः'केँ देखैत छथि अथवा रसानुभूतिकेँ ब्रह्मा स्वादक सहोदर कहैत छथि ताहि प्रकारक अनुभूति निर्मल अन्तःकरणक चेतनामय अनुभूतिसँ रिचर्ड्सहुक ग्रन्थमे भेटैत अछि। मनक स्वास्थ्य कहल जाय, बुद्धिक स्वास्थ्य संचार कहल जाय, किन्तु समालोचकक दायित्व छनि एहि मानसिक स्वास्थ्यसँ सम्बद्ध। अस्तु रिचर्ड्स महाशयक विशिष्टता अछि ओहि संतुलित चित्तक मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुतकरब आओर ओहि चित्तक स्थितिकेँ मूल्यवान घोषित करब।

मैथिलीमे समालोचना लिखब आधुनिक कालमे आरम्भ भेल अछि। यद्यपि ई देन बंगाली समालोचक लोकनिक कहल जा सकैत अछि। कारण विद्यापति आ ज्योतिरीश्वर विषयक विश्लेषण सभसँ पहिने बंगालहिमे आरम्भ भेल छल। म. म. हरप्रसाद शास्त्री प्रभृति साहित्यिक चिंतक लोकनि एहि दिशामे मार्गदर्शन कएलनि। ओना कवीश्वर चन्दा झा सन साहित्यिक अनुसंधाता भूमिका लेखनक रुपमे समीक्षा करब आरम्भ कएलनि। एकर बाद पं० चेतनाथ झा, म० म० मुरलीधर झा, गंगानाथ झा, डॉ. अमरनाथ झा, डॉ. उमेश मिश्र, डॉ. सुभद्र झा, रमानाथ झा एवं मोहन भारद्वाज प्रभृति अपन-अपन आलेखसँ मैथिली समालोचनाक मार्गकेँ प्रशस्त कएल। एकर अतिरिक्त मैथिलीक प्राध्यापक लोकनि जेना सुधाकर झा शास्त्री, जयदेव मिश्र, आनन्द मिश्र, लेखनाथ मिश्र, दिनेश कुमार झा, दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ. इन्द्रकान्त झा, वासुकीनाथ झा, परमेश्वर झा प्रभृतिक समालोचनात्मक निबंध एवं ग्रंथ सभ मैथिली

समालोचना साहित्यमे ख्याति पओलक। एहि सरणीपर चलैत राज मोहन झाक समालोचनात्मक निबंध सभ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित अछि। जकर चारि गोट संग्रह अद्यावधि प्रकाशित भए चुकल अछि। अन्यान्य अनेक समालोचनात्मक निबंध सभ अनेक पत्र-पत्रिकामे रहि गेल अछि। राज मोहन झाक आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह अछि - गलतीनामा (1983), टिप्पणीत्यादि (1992), भनइ विद्यापति (1992), एवं प्रसंगतः (2001)।

गलतीनामा राज मोहन झाक प्रसिद्ध आलोचना ग्रन्थ अछि। एहिमे एगारह गोट वैचारिक आलोचना संगृहीत कएल गेल अछि। पहिल शीर्षक 'हाय रे हमर इतिहास'मे डॉ. जयकांत मिश्रक एकटा निबंध 'स्वातंत्रयोत्तर भारतीय साहित्य' जे साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अछि। ओहिपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ कएलनि अछि। यद्यपि एहि निबंधपर आनो-आन सभ प्रश्न ठाढ़ कएने छथि। एकटा प्रसंग द्रष्टव्य अछि - ''एकटा अभिनव सूचना एहिमे इहो नहि अछि जे रामदेव झाक लेखन एखन वर्गीकृत नहि कयल जा सकैत अछि, कारण जे ओ प्रयोगावस्थामे छथि। कहबाक नहि काज जे लेख ई आभास दैत अछि जे राजकमल, रमानंद 'रेणु', हंसराज, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन आ जीवकांतक बाद आबऽ वाला नव्यतम पीढ़ीमे रामदेव झाक नाम अबैत अछि आ तकरा बाद बहुत रास जे कथाकार सभ छथि ताहिमे सँ ओ एखन उल्लेख करबा योग्य नहि भेल छथि।''[3] गलतीनामामे दोसर आलोचना अछि - 'एकटा पत्र : सन्दर्भ इतिहासक'। एहिमे आलोचक डॉ. जयकान्त मिश्रक पक्षपात आ विश व मनपर चर्चा कएलनि अछि। तेसर आलोचना 'डॉ. दिनेश कुमार झाक इतिहासक पहिल पृष्ठ'मे दिनेश कुमार झा पर व्यंग्य करैत लिखैत छथि - ''मैथिलीक उच्च कक्षाक छात्र लोकनिक हेतु उपर्युक्त पाठ्यग्रन्थ सुलभ करयबाक संकल्प। 'एकटा वृहत् इतिहासक योजनाक सूचना आर आह्लादकारी होइत अछि। किन्तु तकराबाद ई बुझबामे अबैत अछि जे जें कि वृहत् इतिहासक विशाल कार्यमे स्वभावतः अधिक समय चाही, तें ई निर्णय कयल गेल जे तत्काल एक छात्रोपयोगी संक्षिप्त आलोचनात्मक इतिहास लिखा प्रकाशित कयल जाय।''[4] अगिला आलोचना अछि - 'स्थापित इतिहासक प्रति षड्यंत्र'। एहिमे देखौलनि अछि जे कोना इतिहासकार लोकनि लोकक रचना महत्तामे छल-छद्म करैत छथि। अगिला रचना अछि - मैथिली अकादमी 'विसा-विस' मैथिली उपन्यास' शीर्षकमे राज मोहन ई देखौलनि अछि जे जखन आदर पूर्वक लिखबाओल जाइत अछि तँ लोक केहन रचना करैत छथि आ अपना लेल अलग मानसिकता रखैत छथि। 'समीक्षा नहि' आलोचक राज मोहन झा टेक्स्ट बुकक पुस्तक रचनामे संपादक मंडलकेँ आँखि खोललनि अछि हुनका खुलिकए दुत्कारलनि अछि। अनेक तथ्यात्मक त्रुटिक उद्भेदन सेहो कएलनि अछि। 'विष वृक्ष चतरि रहल अछि' मे साहित्यमे परिवर्तित नाम सभक उल्लेख विशेष रुपेँ कएलनि अछि। 'प्राध्यापकीय दायित्व ओ निर्वाह'मे प्राध्यापकलोकनिक द्वारा विषय-वस्तुक अर्थान्तर करएपर विचार कएलनि अछि। नामक दुर्गतिः आलोचनाक अवगति, आलोचकक गछाड़मे पड़ल मैथिली पोथी' आ प्राध्यापकीय भाषाक बानगी' आदि आलेख सभमे एहिना व्यक्तिगत त्रुटि सभक दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट कएलनि अछि।

टिप्पणीत्यादिमे इक्कैस गोट समालोचनात्मक निबंध संगृहीत भेल अछि। एहिमे उत्कृष्ट कोटिक समालोचना सभ प्रकाशित अछि। पहिल आलेख 'साहित्य अकादेमी : मैथिलीक सन्दर्भमे राज मोहन झा साहित्य अकादेमीसँ भेटएवला पुरस्कारक वितरणमे होबएवला विचारहीनता दिश ध्यान आकृष्ट करबैत छथि। जाहिमे उत्तम कोटिक रचना सभकेँ समक्ष नहि लाओल जाइत अछि। दोसरो आलेख साहित्य अकादमी : मैथिलीक संदर्भमे (**2**), साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधिकेँ अपन दायित्वक निर्वाहमे लापरवाहीक दिस ध्यान आकृष्ट कएलनि अछि।

'नवतुरियाक नाम खुजल चिट्ठी'मे एक गोट विचार गोष्ठीक मंथनोपरान्त कएल गेल निर्णयक चित्रण भेल अछि, जाहिमे लेखक कहैत छथि - ''पूछल जा सकैत अछि, जखन 'नवतुरिया एतेक बूढ़, पुस्स फोंक आ फुसियाही भऽ सकैत अछि तऽ आब ककरासँ आशा कएल जा सकैत अछि?'[5] कतेक वेदना छनि आ चिन्ता छनि नवतूरक अनुगामी साहित्यकारक पीढीपर। 'दिल्लीमे मैथिली (1)' नामक आलोचनात्मक निबन्धमे जतए मैथिल आ मैथिलीक दुर्गतिक चित्रण करैत कहलनि अछि जे एतेक पैघ संख्यामे रहितहुँ मैथिली अपन सीमानसँ आगाँ नहि बढ़ि सकल अछि। पुनः 'दिल्ली मे मैथिली(2)' नामक दोसर आलेखमे प्रसन्नता व्यक्त करैत कहैत छथि जे दिल्लीमे एतेक लोक रहैत छथि आ विद्यापति पर्व मनबैत छथि, मुदा हुनका लोकनिक व्यवहारसँ ओ दुखी छथि जे बाहरोमे रहिकए ओ सभ एक सूत्रमे नहि बन्हाएल छथि। मैथिलीक नाम पर (मातृभाषाक नामपर) ओ लोकनि एकजुट नहि भए सकल छथि, जाहिसँ आलोचक राज मोहन झाकेँ हार्दिक कष्ट छनि। राज मोहन झा साहित्य अकादेमी एवं एकर कार्य प्रणाली तथा प्रतिनिधिसँ ओ बहुत अधिक असंतुष्ट रहैत छलाह, तेँ 'साहित्य अकादेमीमे मैथिली आ हमर मैथिली प्रतिनिधि' शीर्षक निबन्धमे प्रतिनिधि लोकनिक अज्ञानता पर प्रश्न उठौलनि अछि। कारण प्रत्येक प्रतिनिधि अपन पूर्ववर्ती प्रतिनिधिकेँ दोषी मानैत छथि। 'सन्दर्भ : साहित्य अकादेमीमे मैथिली-किछु प्रश्नोत्तर' निबन्धमे समालोचक डॉ. जयकान्त मिश्रक निबंध पर प्रश्न उठौने छथि। 'देखब एकटा प्रदर्शनीक' निबन्धमे लेखक साहित्य अकादेमीक व्यवहार पर दुखी होइत छथि। कारण मैथिलीक जे निम्नतर स्थान देल गेल छल से वास्तवमे चिन्तनीय छल। लेखकक शब्दमे - ''कक्ष जाहिमे प्रदर्शनी लागल छलैक राष्ट्रीय प्रतिनिधि साहित्यिक संस्थाक गरिमाक अनुरुप पैघ तँ नहिये कहल जा सकैत छल, ताहू पर जखन दू बेर परिक्रमाक' चुकलाक बाद मैथिलीक नाम पट्ट कोनो टेबुल पर नहि भेटल, तँ बुझायल जेना एत' आयब निरर्थक भ' गेल।.....1 जनवरी 1974 घरि विभिन्न भाषामे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पोथीक जे सूची कक्षमे उपलब्ध भेल ताहिमे बादमे टॉर्चो ल' क' देखला पर मैथिलीक नाम कतहु नहि भेटल। पालीक संग जाहि खानामे मैथिली कोष्ठित छल तत' निहुरियेक' पहुँचल जा सकैत छल।''[6]

'मैथिलियोमे सार्त्र जनमि सकैत अछि' शीर्षक निबन्धमे आलोचक राज मोहन झाक हार्दिक वेदना प्रस्फुटित भेल अछि। जे कोना मैथिलीक भेटएवला पुरस्कार आ सम्मानमे राजनीति आ चकल्लसबाजी चलैत अछि एहि दिश ध्यान आकृष्ट करैत दुःख व्यक्त कएलनि अछि। 'प्रश्न लेखनक प्रासंगिकताक'क सम्बन्धमे जानकारी देबाक प्रयास कएलनि अछि। लेखकक चिन्ता देखल जा सकैत अछि, हुनकहि शब्दमे - ''आइ मैथिली साहित्यमे आलोचना लेखकक पूर्ण अभाव अछि तेँ एहि अभावकेँ जतेक शीघ्रपूर्ण कएल जाय ततेक बढ़िया। एहि तरहक समालोचना विशुद्ध साहित्यिक दृष्टिएँ होएबाक चाही। पत्र-पत्रिकामे समालोचनाक हेतु विशेष व्यवस्था होएबाक चाही।''[7] मैथिलीमे पोथी समीक्षा, साहित्येतिहास लेखनक बाट तकैत, रचना संकट आ मैथिली लेखक, समकालीन मैथिली आलोचनाक यथार्थ, मैथिली कथामे सामाजिक चेतनाक विकासक्रम, समकालीन मैथिली कविताक यथार्थमे, नवम दशकमे मैथिली कथा आदि अनेक आ लेखक माध्यमसँ राज मोहन झा मैथिली साहित्यक प्रति अपन उत्सुकता, जिज्ञासा, विचार, चिन्ता एवं अनन्य प्रेम देखौलनि अछि।

'भनइ विद्यापति'मे कुलम दस गोट समालोचनात्मक निबंध संगृहीत भेल अछि। वर्ष 1992 मे वाग्मिता प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित भेल अछि। जाहिमे उत्कृष्ट कोटिक समालोचना निबंध सभ संगृहीत अछि। पहिल आलोच्य शीर्षक 'भनइ विद्यापति' आलेखक माध्यमसँ ओ कहए चाहलनि अछि जे मात्र 'भनहि विद्यापति' गओलासँ

कोनो लाभ नहि अपितु एहि नाम पर एकजुट भए मैथिलीक विकासक मार्ग प्रशस्त करबाक प्रयास करैत रहबाक चाही। 'विद्यापति पर्व-समारोह आ हम सभ' शीर्षकमे ओ विद्यापति-पर्वकेँ मैथिली भाषा एवं साहित्यक विकासक लेल मनाओल जएबाक बात कहलनि अछि। लेखकक शब्दमे - "मैथिली संस्था सभ जँ अपन दिशा ताकि लए आ तदनुरुप अपन चरित्रक निर्माणक रचनात्मक कार्यमे लागि जाय, तँ विद्यापति पर्व-समारोहकेँ हम सभ कतेक पैघ सार्थक भूमिका दऽ सकैत छी, सोचल जा सकैत अछि।"[8] हिनक **'**भनइ विद्यापति**'** निबन्ध संग्रहमे विद्यापतिक नाम पर भए रहल साहित्यि अराजकता दिश ध्यान आकृष्ट कएलनि अछि तँ दोसर दिस इहो देखौलनि अछि जे एकरा सकारात्मकता दिस लए जायब हमरे सभक पुणीत कर्त्तव्य अछि।

'प्रसंगतःमे तीन गोट स्तम्भ शीर्षक अछि विषय, व्यक्ति आ कृति एकर नामकरण प्रसंगतः एहि लेल कएल गेल जे एकर प्रत्येक आलेख कोनो ने कोनो तगेदासँ जुड़ल अछि। एकर अतिरिक्तो आलेख सभ अछि। जेना **'**साहित्यमे माफिया-तत्त्वक प्रवेश**'** कमाध्यमसँ लेखक साहित्यक जतियारए पर चिन्ता व्यक्त कएलनि अछि। जे व्यक्ति जाहि ठाम उपस्थित रहैत छथि ओ अपन परिवार आ सम्बन्धी सभक स्वार्थ पूर्ति लागि जाइत छथि। 'साहित्य अकादेमीक परामर्शदातृ मंडल ओ मैथिली प्रकाशन' निबन्धमे परामर्शदातृ मंडलक क्रियाकलापक विश्लेषण कएल गेल अछि। जाहिमे साहित्य अकादेमीक काजमे होबएवला बन्दरबाटके देखौलनि अछि। 'कोन बात के दोषी**?**' आलेखमे लेखक उपेन्द्र दोषीक **'**दोषी**'** टाइटल पर व्यंग्य कएलनि अछि। 'गलत खाता मे दर्ज करमी झील' शीर्षक आलेखमे बहुविधावादी रचनाकार जीवकान्तक रचना **'**करमीझील**'**क सम्बन्धमे अपन आ जीवकान्तक विचारधारासँ परिचय करौलनि अछि। **'**जीवन यात्रा प्रसंग**'** शीर्षक आलेखमे लेखक भीमबाबूकेँ संबोधित करैत हुनक मनक किछु शंकाक समाधान कएलनि अछि।

निष्कर्षत: एहि प्रकारे हम कहि सकैत छी जे राज मोहन झा मिथिला आ मैथिलीक सशक्त सिपाही छलाह। ओ मैथिली विकासक लेल बनल संस्था सभसँ प्रसन्न रहैत छलाह। मुदा ओहिमे जे जतियारए घुसि जाइत अछि, ताहिसँ हुनक मोन खिन्न भए जाइत छनि। साहित्य अकादेमी जे भारतक साहित्यिक शीर्षस्थ संस्था अछि। जकर एकटा गरिमा होइत छैक। मुदा ओकरहुँ परामर्शदातृ समितिक सदस्यलोकनि अपन निष्ठा बनाकए नहि राखि पबैत छथि। राज मोहन झाक आलोचनात्मक निबन्ध सभ कोनो साहित्यक व्याख्या नहि करैत अछि। अपितु ओ समाजक मार्गदर्शन करैत अछि। हिनका मैथिली आ मिथिलाक चिन्ता छनि। तेँ साहित्य अकादेमीसँ लए स्वतंत्र संस्था सभक कार्य शैलीक बखिया उधेरि नव बाट देखएबाक प्रयास कएलनि अछि।

सन्दर्भ :

1. डॉ० जयधारी सिंह, समालोचनाशास्त्र, 1989. मैथिली अकादमी, पटना, पृ०- 3
2. तत्रैव, पृ०- 23
3. झा राज मोहन, गलतीनामा, 1983. वाग्मिता प्रकाशन, पटना, पृ०- 4
4. तत्रैव, पृ०- 8
5. झा राज मोहन, टिप्पणीत्यादि, 1992. वाग्मिता प्रकाशन, पटना, पृ०- 10
6. तत्रैव, पृ०-23
7. तत्रैव, पृ०- 55
8. झा राज मोहन**,** भनइ विद्यापति, 1992. वाग्मिता प्रकाशन, पटना, पृ०- 53